SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

बनारस घराने के आधार स्तम्भ - तबला वादन के संदर्भ में

PRABHAT BALI[1], DR. SONIA AHUJA[2]

1Research Scholar, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab
2 Assistant Professor, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab

सार

तबला वादन की परम्परा भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण अवयव है। इस परम्परा को पीढ़ि दर पीढ़ि आगे बढ़ाने में 'घराने' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है किसी भी विधा विशेष की प्रगति की सूचक होती है जो उसका प्रचार प्रसार करती हुई, उसे सम्मान का अधिकारी बनाती है प्रस्तुत शोध प्रपत्र में बनारस घराने के सुविख्यात तबला वादकों के जीवन व वादन शैली से सम्बंदित भिन्न भिन्न पहलु पर चर्चा की गई है

मूल शब्द- *तबला, वादको, वादन, बनारस, घराना.*

प्रस्तावना

संगीत के अर्न्तगत गीत वाद्य का नृत्य तीनो कलाओ का समावेश सर्वमान्य है व तीनो कलाओं का आधार तत्व 'ताल' है लय के जन्म के साथ ही उसको दर्शन के लिए किसी क्रिया की आवश्यकता पढ़ी और परिणामास्वरूप ताल का निर्माण हुआ। काल का अर्थ है समय! समय को गापने के लिए जो प्रक्रिया प्रयोग में लाई जाती है उसे ही ताल के नाम से सम्वोदित किया जाता है संगीतार्णव में ताण्डव नृत्य से ता और लस्य से 'ल' के संयोग से ताल शब्द की व्यप्तति बतायी गई है 'रागार्ण' के अनुसार 'ताल' शब्द के साथ 'अनु' प्रत्यय लगाने से ताल शब्द की व्युत्पति होती है संगीत दर्पण में तकार से शंकर या शिव और लकार रो पार्वती या शक्ति दोनो के योग को ताल कहा गया है।

ताल की अभिव्यक्ति हेतु प प्राचीन काल से आज तक अनेक नवीन ताल वाद्यो का अविष्कार हुआ उदारनाथ भूमि दुंदभी नागाडा मृदंग, परवावाज, तबला इत्यादि। आधुनिक काल में तबला सर्वाधिक लोक प्रिय ताल वादय है संगीत की प्रत्येक विधा (शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत अथवा लोक संगीत)में संगति के लिए तबला एक अनिवार्य वाद्य बन चुका है वर्तमान काल में तबला वादन इतना विकसित हो चुका है कि इसमे अन्य वाद्यो की तरह स्वतंत्र वादन की भी परम्परा चल निकली है जो काफी लोक प्रिय है वर्तमान समय में तबला वादको के प्रमुख छः घराने माने जाते है दिल्ली घराना, अजरोडा घराना, लखनऊ घराना, फरूखाबाद घराना, बनारस घराना तथा पंजाब घराना।

इन सभी घरानों में से दिल्ली घराना सबसे प्राचीन व प्रथम घराना माना जाता है

1 **दिल्ली घराने** के प्रर्वतक उत्साद सिद्धार खां द्वारा इस घराने का प्रारम्भ हुआ। इस घराने में चाटी एवं किनार के बोल अधिक सुनने को मिलते है।

2 **अजराड़ा घराना** - उ० सिताब खां सिद्धार खां के पौत्र के शिष्य उ० कल्लू खां व मीरू खां द्वारा अजराड़ा घराने के जन्म हुआ मिश्र जाति में कायदे का वादन इस घराने की मुख्य विशेषता है।

3 **लखनऊ घराना** - इस घराने की शुरूआत उ० बक्शु खां तथा मौदू खां द्वारा हुई। दिल्ली व अजराड़ा घराने में बोलो के निकास हेतु दो अंगलियों के स्थान पर पाचों अंगलियो का प्रयोग इस घराने कि मुख्य विशेषता है

4 **फरूखाबाद घराना** - फरूखाबाद घराने के संस्थापक उ० विलायत अली खां को माना जाता है इस घराने में चाला या वादन बजाया जाता है जो इस घराने को मुख्य विशेषता है।

5 **पंजाब घराना**- पंजाब घराने का प्रारम्भ पं लाला भवानीदाय द्वारा हुआ इस घराने के तबला वादन पर परवावज वाद्य की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

6 **बनारस घराना** - बनारस घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० राम सहाय जी बनारस घराने के संस्थापक माने जाते है इन्होने बनारस घराने की वादन शैली में मूल भूत परिवर्तन किया और अनेक प्रकार की रचनाए बनाकर बनारस घराने को एक अलग पहचान और प्रतिष्ठा प्रदान की। बनारस घराने की निम्नलिखित विशेषताए इसे अन्य घरानों से प्रथक करती है।

1) इस घराने में तबला मिलाने के पश्चात थाप देना बनारस घराने की विशेष पहचान है

2) इस घराने में ठेके को विभिन्न प्रकार से बजाया जाता है

3) यह घराना गायन, वादन व नृत्य तीनो की संगति के लिए उत्तम माना गया है

4) फर्द नाम की विशेष गते इस घराने की प्रमुख विशेषता है

5) बनारस घराने में परवावज एंव नृत्य के बोलो की छाप मिलती है

6) बनारस घराने की बंदिशो में खुलापन जोरदारी, गम्भीरता एंव माधुय का सुन्दर समावेश देखने को मिलता है।

बनारस घराने की शिष्य परम्परा ने इस घराने की और भी समृद्ध किया है पं राम सहाय जी के शिष्य प्रशिष्यो की परम्परा में पं कंठे महाराज, पं० अनोखे लाल मिश्र, पं सामता प्रसाद, पं० किशन महाराज उल्लेखनीय है।

पं० राम सहाय

पं० राम सहाय जी का जन्म सन् 1797 ई० को वाराणसी में हुआ। आपके पिता जी का नाम पं० प्रकाश महाराज था आपको तबला वाद्य की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता जी तथा चाचा जी से प्राप्त की। कठिन रियाज के फलस्वरूप आप 9-10 वर्ष की आयु में ही एक कुशल तबला वादन के रूप प्रसिद्ध हो गए थे एक संगीत सम्मेलन में आपका तबला वादन लखनऊ घराने के उस्ताद मौदू खां जी ने सुना और आपको अपना शिष्य बनाने की इच्छा आपके पिता से प्रकट की अतः आपके पिता जी ने आपको उनकी शिष्यता में सौंप दिया। इस प्रकार उस्ताद मौदू खां की छत्रछाया में आपकी शिक्षा शुरू हो गयी। आप मौदू खां सहब के परिवार में एक सदस्य के रूप में रहकर ही सीखा करते थे अतः आकपी गुरू माता का भी उतना ही स्नेह मिल रहा था। उ० मौदू खां साहब की पत्नी पंजाब घराने के सुविख्यात तबला वादक की पुत्री थी व तबले की एक उतकृष्टि ज्ञाता थी इसी प्रकार से मौदू खां द्वारा लखनऊ घराने की तथा उनकी पत्नी द्वारा पंजाब घराने की शिक्षा और तकनीक उन्हें भरपूर प्राप्त हुई आपने नवाब के दरबार में सात दिनों तक लगातार तबला वादन किया था और त्तकालीन सभी उस्तादों ने आपको श्रेष्ठ तबला वादन के रूप में मान्यता दी थी आप ने अपनी प्रतिभा से एक मौलिक व नवीन वादन शैली का निर्माण किया अनेक बन्दिशो का निर्माण किया तथा तबला वादन को एक नवीन दिशा दि।बनारस घराने की स्थापना करते समय पं० राम सहाय जी ने कहा था कि है चतुमुर्खी तबला है और इसका वादक किसी भी विद्या की कुशल संगति में सक्षम होग तथा एकल वादन में भी दक्ष होगा आपका यह कथन आपके जीवनकाल में ही सच साबित हो गया अपने इस स्वमिर्मित घराने की शिक्षा 7 शिष्यों पं० रामशरण मिश्र, पं० प्रताप महाराज पं० भगत जी, पं० बैजु जी और पं० यदुनन्दन जी को दी। अपने छोटे भाई पं० जानकी सहाय का नृत्य छड़ाकर उन्हें भी तबला सिखयाा तथा जीवन के अन्तिम दिनो में अपने भतीजे पं० भैरव सहाय को भी अपना शिष्य बनाया ।तबले के इस विशिष्ट घराने के जनक इस महत्वपूर्ण घराने के प्रवर्त्रक माच 46 वर्ष की आयु में अपने अनुयानियो का भरा पूरा परिवार छोडकर नाद ब्रह्म में लीन हो गए।

पं० कठे महाराज

बनारस घराने के वरिष्ठ तबला वादन पं० कंठे महाराज का जन्म सन् 1879 ई० में अशिवनी मास की अमावश्या की काशी नगरी के पतिकृत संगीति परिवार में हुआ पं० कंठे महाराज पं० दिलीप मिश्र और श्री मती शयाग कुमारी देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे धर्म परम्परा संगीत के प्रतिनिष्ठा एंव समर्वय की भावना का मूल मंत्र आपको अपने माता पिता से प्राप्त हुआ लगभग न वर्ष की आयु में पं० कंठे महाराज जी ने गुरू बलदेव सहाय जी से विधिवत तबला वादय की शिक्षा लेनी प्रारम्भ कि तथा सही से प० कंठे महाराज जी का संगीतित जीवन का सपना प्रारम्भ हुआ पं० कंठे महाराज जी ने लगभग चार पांच वषो तक गुरू के सानिध्यं में रहकर तनम न से कड़ा अभ्यास किया तथा तबला वादय की विशिष्ट

शिक्षा प्राप्त की। अपने गुरू से बनारस घराने की वादन शैली की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त कर के आप बनारस लौट आये और निरन्तर 10 से 12 घंटे अभ्यास कर के अपने तबला वादन को ओर भी समग्र एवं प्रभाव पूर्ण बनाया। आपके वादन ने बनारस की परम्परागत विशिष्टताये विद्यमान थी

पं० कंठे महाराज लय ताल के प्रकाड़ विदान थे आपको गलत फंढ लग्गी लडी बोल बाद वादन पर एक विशेष निपुणता प्राप्त थी आप शुद्ध बनारस बाज के प्रसिद्ध तबला वादक के रूप में जाने जाते थे देश के प्रतिष्ठन अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों तथा इलाहबाद काशी गया कलकत्ता, पटना मुम्बई दिल्ली आदि में अपने स्वतन्त्र तबला वादन व संगीत कर विशिष्ट इत्यादि पाई थी आप आकाशवाणी के उच्च श्रेणी से सम्मानित तबला वादक थे आपके प्रमुख शिष्यों में आपके पुत्र पं० किशन महाराज शिष्य पं० शारदा सहाय पं० राम शंकर सहाय पं० कृष्ण कुमार गंगोली पं० जादू नाथ मिश्र आदि के नाम उल्लेखनिये है जिन्होने अपने तबला वादन से बनारस घराने को देश विदेश सुप्रसादि किया। आजीवन नियम, संयम शुद्ध आचरण चरिए एवं धार्मिक आस्था की पूर्ण शुचिता के साथ की गई दीर्घकालीन साधना के फलस्वरूप आपने अपने वादन कला का पश्चम फहराया और 01-08-1969 को रात्रि के 10 बजे कबीर चौरा स्थित आवास पर आपका देहावसान हो गया। पं० कंठे महाराज जी का पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया और देखते ही देखते काशी के इस महान विभूति पुज्य गुरू पं० कंठे महाराज जी का नश्वर शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

पं० अनोखेलाल मिश्र

बनारस घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० अनोखेलाल मिश्र जी का जन्म सन 1914 ई0 को वाराणसी में हुआ आपके पिता पं० बुद्ध प्रसाद मिश्र एक प्रसिद्ध सारंगी वादक थे 6 महा की अपायु में आपकी माता तथा ढाई वर्ष की बाल्यावास्था में आपके पिता को देहान्त हो गया तथा आपका पालन पोषण अपकी दादी श्री मती जानकी देवी ने किया आपका बचपन अत्यन्त अभाव एवं कष्ट में बीता। जब आप केवल 5-6 वर्ष के थे तो आपकी दादी ताबला वादय की शिक्षा हेतु आपको सुविख्यात तबला वादक पं० भैरव प्रसाद मिश्र जी के पास ले गई जहा अपने तबला वादय की शिक्षा लेनी प्रारम्भकि कि शिक्षा का या क्रमं 15 वर्ष तक चला। गुरु के सानिध्य में अपने कठोर प्ररिश्रम किया तथा बनारस घराने की अनेक बंदिशों में सिदिता प्राप्त कर ली। आप प्रतिदिन घण्टो अभ्यास करते थे तथा धीरे धीरे आपने अभियाश की अवधि बढाते हुए प्रतिदिन अठारह घण्टे तक कर दि। मात्र 16-17 वर्ष की अवस्था में ही आप स्वतंत्र वादन तथा संगति दोनों में ही प्रवीण हो गये थे गुरू भक्ति एवं नम्रतापूर्ण स्वभाव के कारण इनकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी तथा आप तबले के अद्धितीय कलाकार के रूप् में संगीत जगत में छा गये आप जैसा 'ना धिधिना' आज तक कोई नही बजा सका, आपको ना धिधिना का जादूगर कहा जाता है 'ना धीिं ना' एवं घिर धिर के लिए आज भी आपने ना केवल अनेक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञो के संघ संगति के कार्य क्रम किये अपितु महान तबला वादकों के साथ आपके साथ किए गए कार्यक्रम आज भी याद किए जाते है जिन में कुछ एक निम्न प्रकार है

सुविख्यात संगीतज्ञो के साथ संगति के कार्यक्रम विनायक राव पटर्वधन, उस्ताद बडे गुलाम अली खां भी मसेन जोशी आदि। उस्ताद फैयाद खां, पं० उस्ताद विलायत खां.सुविख्यात तबला वादकों के साथ जुगल बंदी के कार्यक्रम पं० ज्ञान प्रकाश पं० सामता प्रसाद मिश्र उस्ताद वहवीवुद्दीन आदि

पं० सामता प्रसाद मिश्र

बनारस घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० सामता प्रसाद जी, जो विश्व भर में गुदई महाराज के नाम से विष्यात हुए का जन्म सुन 1920 ई0 को वाराणसी मे हुआ। आपके पिता पं० बाचा मिश्रा बनारस के प्रसिद्ध तबला वादक थे। आपने तबले की प्रारम्भिकि शिक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की। जब आप केवल 10 वर्ष के थे, आपके पिता का साया आपके सिर से उठ गया था तथा आपने आगे की शिक्षा पंव बिक्कू महाराज से प्राप्त की थी। सन् 1942 ई० में इलाहबाद में आयोजित एक संगीतिक सम्मेलन में आपको उ० अलाउद्दीन खां जी के साथ तबला संगीत हेतु आमंत्रित किया गया जहाँ आपके तबला वादन में न केवल कार्यक्रम को चार चाँद लगा, संसारिक गतिविधयों ऊपर उठकर एक अलोकिक आनदं की नुभूती करने लगे। सन् 1956 में आपने पहली विदेश यात्रा की तथा नेपाल अफगानिस्तान ईरान, पोलैण्ड, रूमानिया, रूस, इंगलैण्ड आदि देशा में भी वादन कर आपने यश एवं सम्मान प्राप्त किया। आपने कई फिल्मों में भी तबला वादन कर असाधारण ख्याति

अर्जित की है जैसे 1953 ई० में झनक झनक पायल बाजे, तेरी सूरत मेरी आँखे बसंत बहार, सुरेश प्यासी शौले नवाब वाजिदअली शाह आदि। पं० सामता प्रसाद जी को कई सम्मान एवं उपधियाँ प्राप्त हुई जैसे तबला का जादूगर ताल नार्तण्ड, ताल शिरोमणि, तबला सम्राट ताल विलारा संगति नाटक अकादमी पुरस्कार (1979) उत्तर प्रदेश संगीत नाटक आकादमी लखनऊ द्वारा सन् 1971 में रतन सदास्य हाफिल अली खा सम्मान सन् 1972 में पदम श्री और 1991 में पद्मभूषण की उपााधि।

पं० किशन महाराज

बनारस घरान के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० किशन महाराज जी का जन्म सितम्बर सन् 1923 ई० को जन्माष्टमी के दिन काशी में हुआ तथा आपके माता पिता ने आपका नाम किशन रखा आपके पिता जी का नाम पं० हरि महाराज था किन्तु दुभागय वश बाल्यवास्था में ही आपके पिता का साया आपके सिर से उठ गया था अतः आपका पालन पोषण आपके चाचा पं० कंठे महाराज जी ने किया जब आपकी आयु केवल सात कि थी तो आपके चाचा ताल गुरू शिवोमणि पं० कंठे महाराज जी ने आपको तबला वाद्य की शिक्षा देना प्रारम्भ की। कठिन ताल एवम उसमें कलिष्ट लयकारी प्रस्तुत करने में अपकी बचपन से ही रूची थी जिस कारण अप्रचलित तथा विषम मात्रों मे युक्त तालों उदारनाथ 9. 11 13 15 17 19.21 आदि में भी वादन प्रस्तुत करने में आप उतने ही निपुन थे जितना कि तीन ताल एकताल आदि संग मात्रा से युक्त तालों में आपके पास न केवल तिहाइयों एक टुकडा का असिम भंडार था अपितु वादन कलपना एवं आज आपके वादन को ओर भी निश्वर देती थी आप स्वतं. वादन एंव संगत दोने ही विधो में बेजोड थे।

आप ऐसे निपुण व मंजे हुए तबला वादक थे कि कोई भी संगीत सभा आपकी प्रस्तुत देख श्रेता दातें तले उंगलिया चबा लेते थे नृत्य के साथ की गई आपके द्वारा संगत तो श्रोतो का आश्चार्य चाकिट ही कर देती थी। अपार ख्याति के साथ साथ आपने नेपाल, अफगानिस्तान, इंग्लैण्ड, रूस, पोलौण्ड आदि अनेक देशा में भी अपने तबला वादन से प्रसिद्धि प्राप्त की थी आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विशिष्ट श्रेणी के कलाकार थे आपने देश के अनेक प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ संगति की जिन्में उस्ताद फैयाज खां प० भीगसने जोशी पं० रविशंकर उस्ताद अली अकबर खां, पं० शम्भू महाराज विदुष सितारा देवी नटराज गोपीकृष्ण पं० बिरजू महाराज विदुषी गिरिजा देवी इत्यादि उल्लेखनीय है

निष्कर्ष

अततः निषकर्ष स्वरूप यह कह सकते है आधुनिक काल में प्रचलित तबला स्वतंत्र एवं संगीत दोनो विधो में प्रयोग होने वाला संवादकि लोकप्रिय वाद्य है जिसके आज छे घराने (दिल्ली अजराडा, फरूखाबाद लखनऊ, बनारस और पंजाब) प्रचार में है प्रत्येक घराना सांगीतिक कोश में पीढी दर पीढी वंश और शिष्य परम्परा के साथ आगे बढ़ता रहा है इसी संदर्भ में बनारस घराने के वंशज एवं शिष्य अपनी प्रतिभा कौशल मेहनत समर्पण और गुरू आशीवार्द का परिचय देते हुए अपने घराने को विकास की राह पर सदेव आगे बढ़ा रहे है बनारस घराने की वादन शैली की विशेषता ने जहा एक विल्क्षण पहचान दी वही इस घराने के कलाकारों ने इस पहचान को प्रतिष्ठा दिलाई। पं० राम सहाय जी द्वारा स्थापित इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकार पं० कंठे महाराज, पं० अनोखे लाल मिश्र, पं० समता प्रसाद.ऐसे प्रतिभावन तबला वादक हुए जिन्होने अपने वरिष्ठ कलकारों की प्रतिष्ठ को कायम रखते हुए अपने अथक परिश्रम के बल पर तबला वादन को एक नई ऊचाईयो तक पहुंचाया। इनकी उपबबिधया इस बात की पारचायक है कि इन महानुमतियों ने बनारस घराने की परम्परा को न केवल आगे बढाया अपतुि देश विदशे में बनारस घराने को एक ऐसा स्थान दिलवाया जिसे संगीत जगत का प्रत्येक प्राणि सदा आपका रिणी रहेगा।

संर्दभ

मिश्र कामेश्वर काशी की संगीत परम्परा भारत बुक सेष्ठ 1997 प्रथम संरकरण
मिश्र छोटे लाल तबला ग्रन्थ लखनऊ उ. प्र. कनिष्क पब्लिर्शस 2016 प्रथम संरकरण डिस्ट्रीण्युटर्य नई दिल्ली
शर्मा भगक शरण ताल प्रकाश संगीत हाथरस उ० प्र० 2010 प्रथम संस्करण